कबीर के दोहे-२

जो तोकु कांटा बुवे, ताहि बोय तू फूल
तोकू फूल के फूल है, बाकू है त्रशूिल

दुर्लभ मानुष जन्म है, देह न बारम्बार
तरुवर ज्यों पत्ती झड़े, बहरि न लागे डार

आय है सो जाएँगे, राजा रंक फकीर
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बँधे जात जंजीर

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब
पल मे प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब

माँगन मरण समान है, मति माँगो कोई भीख
माँगन से तो मरना भला, यह सतगुरु की सीख

जहाँ आपा तहाँ आपदां, जहाँ संशय तहाँ रोग
कह कबीर यह क्यों मिट, चारों धीरज रोग

माया छाया एक सी,बिरला जाने कोय
भगता के पीछे लगे, सम्मुख भागे सोय

आया था किस काम को, तु सोया चादर तान
सुरत सम्भाल ए गाफिल, अपना आप पहचान

क्या भरोसा देह का,बिनस जात छिन मांह
साँस-सांस सुमिरन करो और यतन कुछ नांह

गारी ही सों ऊपजे, कलह कष्ट और मींच
हारि चले सो साधु है, लागि चले सो नीच

दुर्बल को न सताइए, जाकि मोटी हाय
बिना जीव की हाय से, लोहा भस्म हो जाय

दान दिए धन ना घटे, नदी न घटे नीर
अपनी आँखो देख लो, यों क्या कहे कबीर

दस दवारे का पिंजरा, तामे पंछी का कौन
रहे को अचरज है, गए अचम्भा कौन

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय

हीरा वहाँ न खोलिय, जहाँ कुंजड़ो की हाट
बांधो चुप की पोटरी, लागहु अपनी बाट

कुटलि वचन सबसे बुरा, जारि कर तन हार
साधु वचन जल रुप, बरसे अमृत धार

जग मे बैरी कोई नहीं, जो मन शीतल होय
यह आपा तो ड़ाल दे, दया करे सब कोय

मैं रोऊँ जब जगत को, मोको रोवे न होय
मोको रोबे सोचना, जो शब्द बोय की होय

सोवा साधु जगाइए, करे नाम का जाप
यह तीनों सोते भले, साकति, सहिं और साँप

अवगुन कहूँ शराब का, आपा अहमक साथ
मानुष से पशुआ करे दाय, गाँठ से खात

बाजीगर का बांदरा, ऐसा जीव मन के साथ
नाना नाच दखिाय कर, राखे अपने साथ

अटकी भाल शरीर में तीर रहा है टूट
चुम्बक बिना निकले नहीं कोटि पिटन को फ़ूट

कबीरा जपना काठ की, क्या दखिलावे मोय
हृदय नाम न जपेगा, यह जपनी क्या होय

पतिवृता मैली, काली कुचल कुरुप
पतिवृता के रुप पर, वारो कोटि सिरुप

बैध मुआ रोगी मुआ, मुआ सकल संसार
एक कबीरा ना मुआ, जेहि के राम अधार